SUCCESS STORIES – 3 (Poultry Farming)

कृषक का नाम – श्री सुबारस राम
ग्राम – डकईपारा
विकास खण्ड – बैकुण्ठपुर
जिला – कोरिया (छ.ग.)

जिला मुख्यालय कोरिया से लगभग 15 किलोमीटर दूर ग्राम डकई पारा है गांव में औषतन लघु व सीमांत कृषक निवास करते हैं। इस गांव के निवासी में श्री सुबारस राम जो कि युवा कृषक है।

कुछ वर्ष पूर्व इनकी आय का स्रोत दैनिक मजदूरी ही था इनके पास खेती के लिये लगभग 2 एकड जमीन थी एवं परिवार में माता जी पिताजी, 03 बच्चे इनकी धर्म पत्नी व स्वयं है तथा परिवार की माली हालत अत्यंत दयनीय थी। पैसों की कमी के कारण प्रतिदिन मजदूरी करने इधर उधर भटकना पडता था एवं कई बार काम न मिलने पर हतास होना पडता था। परंतु कृषि विज्ञान केन्द्र, कोरिया की मदर व वैज्ञानिक सलाह से व आत्मायोजना की मदद से श्री सुबारस राम को 200 वनराजा व आर. आई. आर. प्रजाति के मुर्गी चूजे दिये गये। व उन्हे तकनीकी ज्ञान हेतु चूजे वितरण के पूर्व केवीके कोरिया में 3 दिवसीय प्रशिक्षण व प्रायोगिक ज्ञान दिया गया एवं उनके घर में खाली बरामदे पर एक छोटा सा मुर्गी घर भी तैयार कराया गया जहां वे अपनी मुर्गियों को रात्रिकाल व दाना देते समय सुरक्षित रख सकें।

इन 200 चूजों को 02 माह 12 दिन पालने के पश्चात लगभग रु. 25500/– की बिक्री कर वे अपने आप को बहुत आत्म निर्भर महसूस करने लगे। तथा इससे प्राप्त खाद का उपयोग अपने खेतों में खाद के रुप में झिडकाव कर रासायनिक खाद के अनुचित व्यय को कम किया। इसके पश्चात श्री सुबारस राम अपने मुर्गी विक्रय से प्राप्त आमदनी से पुनः व्यावसायिक मुर्गों को खरीदकर इस व्यवसाय का आगे बढाया। इस क्रम में वे प्रति 45–65 दिन के भीतर मुर्गों को बढाकर बेचते है। इससे इनकी आय में भी वृद्धि हुई है एवं उनके स्वरोजगार से उनके घर की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ हुई है।

प्रगतिशील युवा कृषक श्री सुबारस राम जी की माता जी बताती है कि पहले वे 2 एक डमें परंपरागत खेती करते थे जिससे उन्हें 10–12 क्विंटल धान प्राप्त होता था अर्थात 25000 से 35000 की वार्षिक आमदनी होती थी आज वर्तमान में धान की खेती के अलावा मुर्गीपालन करने से 45 से 50 हजार की अतिरिक्त आय प्राप्त होने लगी है। गत 02 वर्षो से इस अतिरिक्त आय की प्राप्ति से आज सिंचाई हेतु एक ट्यूबवेल खनन करा लिया है जिससे अब रबी में भी फसल लेना प्रारंभ कर दिया है।